सद्गुरु तत्व बोध
SADGURU TATV BODH

नई दिल्ली | श्री साई शके : 29-30
अंक – 106 | जुलाई – 2011

ॐ

।। ॐ श्री साईनाथाय नमः ।।

।। ॐ श्री सद्गुरूनाथ दादाय नमः ।।

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com
Web : saishraddha-world.com

Patron
Lalita Bhavani Shankar Bhatte

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.100.00
Life time : Rs.500.00

Overseas
Yearly : US$ 50.00
Life time : US$ 200.00

Printed By
Shaarp Advertising
Cell : 09810284136

Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

गुरू पूर्णिमा

हमारे श्री गुरू मतलब वं. दादाजी ने हम सभी भक्तों के माध्यम में एकरूपता हो सके इसके लिये पूरी तौर पर सभी उपाय स्थापित किये हुए मानव कल्याण के कार्य में कर रखे हैं। मतलब हम जैसे सामान्य मानव को ईश्वर की भेंट हो, इसकी योजना सिद्ध करने में वे कहीं भी कम नहीं रहे (HAVEN'T FALLEN SHORT) पर हमें सद्गुरू रूप होने के लिये (हमारे प्रयास) इतने कम क्यों पड़ रहे हैं? (WHY ARE WE FALLING SHORT ?) जब हम पूरी तरह सद्गुरू रूप हो जायेंगे तभी सच्चे अर्थों में गुरू पूर्णिमा मनाई, ऐसा कह पायेंगे। जिस प्रकार चाँद कला–कला से (Part By Part) बढ़ता जाता है और फिर पूर्णिमा होती है, उसी प्रकार क्या हमारा विकास भी कला–कला से हर दिन हो रहा है? हम यह विकास अधिकाधिक किस प्रकार कर पायें इसका विचार करके निश्चय करने का आज का यह दिन है।

निसर्ग नियम के अनुसार इहलोक में उत्पत्ति पाने वाली हर एक चीज़ अविकसित अवस्था से विकसित अवस्था में जाती है। उदाहरण के रूप में, आम के पेड़ को आने वाला फल उसकी अविकसित अवस्था में से (मतलब कच्चा आम) विकास प्राप्त करके सम्पूर्ण रस से परीपूर्ण फल में मतलब आम में (विकसित अवस्था में) स्थित्यंतरीत होता है। फिर मानव, मतलब हम सब, जो इसी निसर्ग परत्वे जन्म को आये हैं, क्या उस परिपूर्ण आम जैसी विकसित अवस्था प्राप्त कर पाये है? आज हम हमारी अविकसित अवस्था से विकसित अवस्था प्राप्त करने के लिए, हमारे माध्यम में से कौन सी कमी (कमतरता) किस प्रकार पूरी कर सकते हैं? इसका विचार करना आज के दिन आवश्यक है।

आसपास के जगत में गरीब से गरीब मनुष्य को लेकर अमीर से अमीर मनुष्य के जीवन में अपूर्णत्व(कमी) दिखाई देती है। हर एक के जीवन में कोई न कोई कमी है। किसी के पास सुखों के साधन कम है, तो किसी के पास सुखों के साधन ज़रूरत से ज्यादा नज़र आते है; लेकिन सुख और

समाधान किसी के जीवन में नज़र नहीं आता। सुख चाहिये मतलब निश्चित रूप से क्या चाहिए और असमाधान किस चीज़ की कमी होने की वजह से अनुभव होता है इसका ज्ञान भी बहुजन समाज के लोगों को आज नहीं है। हमारे जीवन में जो कमी होती है वह पूरी करने के लिए हमारा कर्म दुःख अथवा परेशानी की स्थिति निर्मित करता है, जिससे हम देवादिकों की उपासना से, गुरू कृपा से अपनी जीवन की कमी पूरी कर सकते हैं। लेकिन यह उपासना हम अपने जीवन का उद्धार करने के लिये नहीं, बल्कि सिर्फ जीवन में आयी हुई परेशानी दूर करने के उद्देश्य से करते है। जीवन में हुई बहुत सी कमी, पूरी न होने से हमारी आत्मा को समाधान नहीं मिलता। इसीलिये कितने भी सुखों के साधन मिलने के बाद भी हमें आंतरिक असमाधान का अनुभव होता ही रहता है।

हमें यह जीवन व्यतीत करते समय ऐसा लगता है कि परिवार के लिए घर ले किया, बच्चों को शिक्षा दी, बच्चों की शादी हुई तो जीवन का कर्त्तव्य पूरा हुआ और जीवन सार्थक हो गया। लेकिन जिन ऋणानुबंधों की पूर्णता करने के लिए यह जीवन प्राप्त हुआ है, क्या वह पूरा हो गया? क्या हमने अपना कोई विकास किया? क्या हमारे माध्यम का इस जगत में आकर खुद को और इस दुनिया को कोई उपयोग हुआ?

जीवन विकसित अवस्था मतलब प्रांचिक कर्त्तव्य पूरा करते हुए हमारे जीवन की कमियाँ गुरूकृपा से पूरी तरह भर लेना और जीवन का सार्थक मतलब जीवन की कमियाँ भरने के बाद हमारे माध्यम का उपयोग श्री गुरू, जगत की कमियाँ भरने के लिए कर सकें, इसलिए प्रयत्न करना। यह जीवन का साध्य अर्थ है।

आज कार्य केन्द्र पर आरती के लिए आने के बाद हमें समाधान मिलता है; मतलब क्या होता है? हमने भूख लगने पर अन्न सेवन किया तो समाधान मिलता है। शरीर में पानी की कमी निर्मित हुई तो प्यास लगती है, फिर पानी पीने पर समाधान मिलता है। उसी प्रकार हमारे माध्यम में आत्मिक शक्ति की जो कमी है, वह गुरू कृपा से आरती साधना में से भर जाती है और इसीलिये कार्य केन्द्र पर आने पर समाधान मिलता है। लेकिन यह कृपा की कमी भर जाने के बाद भी हम अपने घर जाने पर वाद-विवाद करने लगते हैं। परेशान होने लगते हैं। प्राप्त हुई कृपा हमें कितना समय समाधान देती है इसका कभी अभ्यास किया है क्या? यह गुरू पीठ तो गुरू कृपा से (आत्मिक/गुरू-शक्ति से) पूरी तरह भर कर (Over Flow) बह रहा है, फिर हमें प्राप्त हुई कृपा इतनी जल्दी क्यों खत्म हो गई और हम परेशान हो गए? क्योंकि यह कृपा धारण करने वाला बर्तन कितना बड़ा है उस पर निर्भर करता है; मतलब कृपा धारण करने वाला हमारा माध्यम कितना विकसित है? इसका अनुमान हम हमारे सूक्ष्म मन के विकसित अवस्था से लगा सकते हैं।

विचार निर्माण होना यह बुद्धि माध्यम का कार्य है लेकिन विचार आने के बाद उसके प्रति भाव या भावना प्रगट करना यह मन का कार्य है। इन प्रगट होने वाले भावों के अनुसार विचारों की दिशा और उनकी गति नियंत्रित होती है। क्या हमारे सूक्ष्म मन का विकास हुआ है, मतलब, क्या हमारे मन में प्रगट होने वाले भाव इस जीवन का विकास करने के लिये पोषक है? हम शरीर को/काया को विकसित करने के लिए, सुशोभित करने के लिये, उसे आराम देने के लिये दिन-रात मेहनत करते है। इस जन्म से हमने कितने भी सुखों के साधन प्राप्त किये या कितना भी पैसा कमाया फिर भी अगले जन्म में वापस शून्य से शुरूआत करनी पड़ेगी; लेकिन इस जन्म में अगर मन का विकास कर लिया तो अगले जन्म में वह विकसित मन साथ में आकर हमें समाधान प्राप्त कर देने वाला है। फिर यह सूक्ष्म मन जो हमेशा रूप में हमारे साथ रहने वाला है, उसका विकास आज तक हमने कितना किया है?

निसर्ग नियम के अनुसार हमारा शरीर, आज सेवन किये हुए अन्न में से उपयुक्त भाग लेकर, अनावश्यक भाग दूसरे दिन शरीर के बाहर फैक देता है; फिर हमारे मन में जो अनावश्यक और हानिकारक ऐसी कितनी पुरानी यादें जो हमने सम्भालकर रखी है वह हम क्यों नहीं बाहर फेक रहे हैं? उसके प्रति तकलीफदायक भार हमने क्यों सम्भालकर रखे है? “पाँच साल पहले कोई व्यक्ति ने हमसे बुरा बर्ताव किया था।” इस प्रकार की असंख्य यादें हमें आज भी क्यों तकलीफ देती है? बुद्धि माध्यम अच्छा होगा तो यादें आयेगी, विचार आयेंगे, बचपन की यादें भी ताजा रहेगी लेकिन अगर सूक्ष्म मन विकसित होगा तो उन विचारों से प्रकट होने वाले भाव हमेशा अच्छे और सभी के लिए हितकारक ही होंगे। अगर हमने यह प्राप्त कर लिया तो आगे का मन का और सूक्ष्म देह का विकास करने की पूरी रूपरेखा सिद्ध रूप में वं. दादा जी ने इस कार्य में करके रखी है। लेकिन उसका लाभ लेने के लिए हमारी तैयारी और समाधान रूप से निश्चिंती चाहिए।

प्रथम विचार यह है कि क्या हमारे माध्यम में कृपा की कमी है, आत्मिक शक्ति की कमी है, यह निश्चित हुआ है क्या? यह कमी गुरू कृपा से भरके, हमें जो माध्यम स्थिर स्वरूप में प्राप्त हुए है – सूक्ष्म मन और सूक्ष्म देह इनका विकास कर लेने की हमारी कितनी इच्छा है? जिस प्रकार काम पर (नौकरी-धंधा) जाने का समय निश्चित है, फिर बाकी सभी चीज़ें बाजू में रखकर जिस प्रकार हम वह समय पकड़ने का प्रयत्न करते हैं, उसी प्रकार हमने साधना का समय निश्चित किया है क्या? सप्ताह में एक बार, सिर्फ खुद की उन्नत्ति के लिए, कार्य केन्द्र पर उपस्थित रहने का निश्चय हमने किया है क्या?

आज हमें खुद के घर में चाय चाहिये या नाश्ता चाहिये तो खुद करना पड़ता है या किसी से माँगना पड़ता है लेकिन किसी अपनो के घर (Close relative) चले गये तो बिना माँगे हमे वह प्यार से खिलाते हैं। फिर यहाँ तो हम भगवान के घर में, भगवान के सामने बैठते हैं, हमें जो चाहिये वह वं. दादाजी के पास या प. पूज्य बाबा के पास मांगने की कुछ जरूरत है क्या? हमें क्या प्राप्त होना योग्य है, यह उनको पता नहीं है क्या? फिर आज, इस कार्य में चार-पाँच साल लाभ लेने के बाद भी कामकाज में देहिक प्राप्ति के लिए पूछना या सुखों के साधन क्यों नहीं मिल रहे है ऐसे पूछना उचित है क्या?

नौकरी-धंधा ठीक से हो इसलिये हमारे कर्मऋणानुबंध विमोचित हो, इसका सिद्ध साधन वं. दादाजी ने कार्य मे कर रखा है, लेकिन वह प्राप्त करने के लिए क्या हमारी सेवा नियमित रूप से शुरू है? गुरूकृपा का उपयोग ऐहिक प्रश्नों के लिए करने के बजाय, अपना देहिक और आत्मिक विकास करने के लिये करना, यह हमारा आज का कर्त्तव्य है।

आज हम जो इस कार्य का लाभ ले रहे हैं उसमें स्वार्थ कितना है और 'परमार्थ' कितना है? ठीक से विचार किया तो ऐसी समझ आयेगी कि इसमें हमारा स्वार्थ भरा हुआ है। यह स्वार्थ अब ईश्वर प्राप्ति के लिये बदलना चाहिये, मतलब स्वार्थ हो, लेकिन वह श्री गुरू से, गुरू की शक्ति से एकरूप होने के लिये हो।

वं. दादाजी ने इस कार्य में "विचार संवेदना" मतलब अन्य व्यक्तियों के लिये प्रार्थना करके उनको गुरूशक्ति का लाभ करके देना और "स्पर्श संवेदना" मतलब हमारे हाथों में से गुरूशक्ति प्रवाहित करना, यह दो महत्वपूर्ण साधन सिद्ध करके दिए हैं। आज हमारे दोषों का गुरूकृपा से विमोचन होने के बाद मतलब दो-तीन साल इस कार्य का नियमित रूप से लाभ लेने के बाद, कामकाज में प्रश्न जरूरी प्रश्न ही पूछना चाहिये कि "कोई दुःखी व्यक्ति को विचार संवेदना देने के बाद भी उसकी परिस्थिति में कोई बदलाव नहीं हो रहा है, तो अभी भी मुझमें क्या कमी है और वह कमी पूरी हो, उस व्यक्ति को सुख समाधान मिले इसलिये मैं क्या सेवा करूँ? या फिर "अपने परिवार में किसी को कोई तकलीफ है तो में उन्हें स्पर्श संवेदना किस प्रकार दे सकता हूँ? लेकिन यह कब मुमकीन होगा, तो जब हमारी नियमित सेवा और साधना से प्राप्त हुई गुरूकृपा हमारे माध्यम के लिये पूरी होने के बाद भी बाकी बचेगी तभी वह अन्य लोगों को दे सकेंगे। यह गुरूकृपा पूरी पड़ती है या नहीं इसका अनुमान लगाने के लिये मतलब हमारे सूक्ष्म मन का विकास जानने के लिये परमार्थ प्रश्नावली का आखरी प्रश्न है, "आज का दिन यथायोग्य रूप से गुजरा इसका समाधान इस क्षण हमें मिल रहा है क्या?"

इस प्रकार विकास होने लगा तो कला - कला से (Part by part) गुरूशक्ति की धारणा से हमारे माध्यम में बढ़ती जायेगी और फिर एक दिन गुरू पूर्णिमा मनायी जायेगी, जब हमारे माध्यम का पूरी तरह विकास होकर, गुरूकृपा हमारे तन्मात्रों से बहेगी, तब हमारे विचारों से, स्पर्श से, नज़र से, वाणी से और सिर्फ हमारे आस्तित्व से गुरू शक्ति प्रवाहित होगी और आसपास के जगत की आत्मिक शक्ति की कमी भर सकेगी, तभी सच्चे माइने में गुरू पूर्णिमा मनाई जायेगी।

गुरूमार्ग में वं. दादा जी ने गुरू प्रसाद के शुरू में लिखा है कि गुरू मार्गदर्शन के अनुसार झुक कर आचरण करना मतलब गुरू मार्ग में एक दूसरे से बर्ताव नहीं है। सिर्फ झुकना जो कि ब्रह्मवाक्य है यानि विनम्रता, आदरयुक्त भक्ति, सेवाभाव यह सूचित करता है। गुरूमार्ग में झुकना प्रमुख रूप से जुबान के लिए कहा गया है। अगर जुबान का इस्तेमाल किसी तेजधार वाले शस्त्र के अनुसार किया गया तो वह कष्ट दे सकता है और अगर नम्रता से किया तो उस व्यक्ति के मर्मों पर मरहम लगाने जेसा हो सकता है।

अगर इस विचार से अपने अन्दर की आत्मिक और गुरूशक्ति हमारे शरीर में जो अगणित बिखरे हुए हारमोन्स है जिनके माध्यम द्वारा कार्यान्वित होती है जिनकी तीव्रता सब से अधिक जुबान पर होती है। इनको कार्यान्वित करके सिद्ध साधन वं. दादा जी ने इसे गुरू मार्ग में कहा है। वं. दादा जी का एक शेर है :

"याद आती है एक दर्द मचाती
सोये हुऐ सागर को ही तूफान मचाती"

मतलब गुरू की याद आई उनका नाम लिया तो गुरूशक्ति कार्यान्वित करने के लिए (धारणा या उसे प्रवाहित करने के लिए) देह में तूफान आना चाहिए। अर्थात जब वं. दादा जी के बताये सिद्ध साधनों द्वारा जैसे "ऊँकार साधना", आरती साधना, मुलाकात साधना, कामकाज साधना से जिह्वा का विकास सौ प्रतिशत हो जाता है। जिह्वा से रस प्रवाहित होता है, इस रसना से किया हुआ एक सद्गुरू नामःस्मरण भी दुःखी व्यक्ति के संकट का निवारण कर उसे समाधान की प्राप्ति कर देता है और आज वं. दादाजी यह इंतजार कर रहे हैं कि,

"तू करी उच्चारण। रसने।। सदगुरूनामःस्मणा।"
"जप तप साधन काहीं न लगे नामाचि अधसंहरणा"

इस रसना के साथ जिस शब्द का उच्चार होता है वह ब्रह्मरूप प्राप्त करता है जिसकी सिद्धता वं. दादा जी ने श्री गुरू पंतमहाराज, वाले कुन्दरी जी से प्राप्त करके इस कार्य में की है।

जिस प्रकार जुबान की जिह्वा और जिह्वा की रसना होती है उसी प्रकार शरीर के अन्य हारमोन्स का भी स्थित्यतर होकर पारमार्थिक अवस्थाओं की प्राप्ति होती है, यह पारमार्थिक अवस्था साधक-सिद्ध और साध्य है।

इस पारमार्थिक अवस्था में पंचमहाभूतत्व, पंचप्राणकोश, पंचतन्मात्रों की उन्नत्ति होती है। परन्तु तन्मात्रों का विकास यानि गंध, रस, रूप, स्पर्श और शब्द। इस पारमार्थिक अवस्था का लाभ होना बहुत मुश्किल है। बहुतांशी साधक यह अवस्था प्राप्त करने के लिए त्रिगुणात्मक शक्ति की उपासना, सन्यास और वैराग्य का मार्ग अपनाते हैं परन्तु इस गुरू मार्ग में आने वाले समय में यह अवस्था सुलभता से प्राप्त कर लेने के लिए श्री गुरू पंतमहाराज, वाले कुन्दरी जी ने शब्दब्रह्म की सिद्धता इस कार्य में की है।

आज के साधक की ऐसी अवस्था है कि अब उसको कोई प्रखर साधन न करके सिर्फ आरती ***साधना, ऊँकार साधना और आचरण साधना साध्य करके श्री गुरू ने दी है*** इससे भी श्रेष्ठ वाणी सिद्ध कर के दी है वह "गुरूवाणी" जिससे शास्त्रों के अनुसार वाणी की स्थियंतर न करते हुए हम इस कार्य में यानि गुरूमार्ग में जैसे जैसे एक रूप होते जायेंगे वैसे वैसे हमारी वाचा से गुरूवाणी प्रकट होगी जब यह गुरूवाणी पूर्णता से प्रकट होगी वही असली गुरू पूर्णिमा होगी। उसकी प्राप्ति करके अखंड रूप से भजन करना मतलब जनों को भजना, मतलब सेवा करना।

ऐसी गुरू पूर्णिमा हम सभी के जीवन में श्री गुरू कृपा से जल्दी से जल्दी मनाई जाये। यह परम् पूजनीय जगतगुरू श्री साईनाथ महाराज, सद्गुरूनाथ दादा महाराज तथा अन्य विभूतियों के चरणों में विनम्र प्रार्थना।

"जय जय कार करा दताचा
जय जय कार करा"

।।शुभ्म भवन्तु।।

जन्मों का सेवक
श्री साईकल्प आध्यात्म संस्था

विनम्र निवेदन

अति हर्ष के साथ आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों को सूचित किया जाता है कि मासिक पत्रिका "तत्व बोध" का आगामी अंक एवं अन्य सूचना वेबसाइट पर एवं मेल द्वारा प्रेषित की जाएगी।

अतः आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों से अनुरोध है कि आप सभी अपना ई–मेल पता एवं अन्य जानकारी यथाशिघ्र निम्न पते पर प्रेषित करें :

Sri Saikalp Adhyatm Sanstha

"Sai Niketan"

5, Jasola Vihar, New Delhi - 110025 Telephone : 26955261

E-mail : saikalp@gmail.com dadab6@mail.com

Please send your yearly subscriptions as early as possible